Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)
ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

हिन्दी के रामकथात्मक उपन्यासों में भाषा प्रयोग

डॉ. एम. नारायण रेड्डी
जेआरपी-हिन्दी, एनटीएस-आई, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु, कर्नाटक।

सार संक्षेप में : भारतीय जन-जीवन में रामकथा का एक विशिष्ट स्थान है, क्योंकि, वह ज्ञान का भंडार है। सत्य और धर्म, भक्ति और मुक्ति, भोग और त्याग, अनुराग और विराग इन सबका समन्वय प्रस्तुत करनेवाली प्रशस्त कथा, रामकथा वास्तव में भारतीयता का अक्षय कोश है। रामकथा के सम्बन्ध में प्राय: कहा जाता है कि जो रामकथा में नहीं है वह विश्व में भी नहीं है, क्योंकि, रामकथा केवल भारत की ही संपत्ति नहीं है, बल्कि वह मानव मात्र की महिमा का गुणगान करनेवाली विश्वजनीन कथा है। वह देश, काल और व्यक्ति की परिकल्पित सीमाओं से परे है। विचारक इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि वाल्मीकीय रामायण ने भारतीय साहित्य एवं सामाजिक चिन्तन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वे उसे वेद तुल्य मानते हैं। इस प्रकार, वह हमारी सामाजिक सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर है।

रामायण और रामचरितमानस भारतीय जन-जीवन एवं जीवन-दर्शन के प्रतिनिधि महाकाव्य हैं। उन में प्राचीन और मध्ययुग की कालगत दूरी तो है, पर देशगत दूरी नहीं है। अपनी अन्तश्चेतना में वे अत्यन्त समीप हैं। अब तक के काव्य रूपी रामकथा को समकालीन उपन्यासकारों ने गद्य का रूप दिया है। अर्थात्, उन्होंने उपन्यास के शिल्प-विधान के अनुसार रामकथा को औपन्यासिक रूप देकर एक नया प्रयोग हिन्दी साहित्य में किया है। यह कहना उचित होगा कि मैंने परम्परा के अंतर्गत स्रोत-ग्रन्थों के रूप में वाल्मीकीय रामायण एवं तुलसी कृत रामचरितमानस को लिया है, तथा रामकथात्मक उपन्यासों के रूप में निम्नलिखित उपन्यासों को लिया है। रामकथा को आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत करने का प्रयत्न नरेन्द्र कोहली ने अपने चारों उपन्यासों– 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' दो भागों में किया है। उसी प्रकार, प्रणव कुमार वन्द्योपाध्याय ने अपने चारों उपन्यासों– 'अमृतपुत्र', 'पदातिक', 'पंचवटी' और 'अरण्यकाण्ड' में किया है। ऐसे ही, डॉ. रमानाथ त्रिपाठी ने अपने 'रामगाथा' उपन्यास में, और भगवान सिंह ने 'अपने अपने राम' नामक उपन्यास में किया है। प्रस्तुत शोध आलेख में रामकथात्मक उपन्यासों में भाषा प्रयोग का विवेचन परम्परा के सापेक्ष्य में किया गया है। इस प्रकार, उपरोक्त रामकथात्मक उपन्यासों में शब्द भण्डार की दृष्टि से कुछ तत्सम, तद्भव, देशज, अरबी-फारसी और आंचलिक शब्दों का उल्लेख किया गया है। साथ ही उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ मुहावरे एवं लोकोक्तियों का उल्लेख भी किया गया है। फिर पात्रानुकूल एवं आलंकारिक भाषा की परख स्रोत-ग्रन्थों एवं उपन्यासों में की गई है।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

संकेत शब्द : भाषा प्रयोग का विवेचन, शब्द भण्डार की दृष्टि से विवेचन, तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, अरबी-फारसी और विदेशी शब्द, आँचलिक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, भाषा की पात्रानुकूलता, आलंकारिक भाषा, निष्कर्ष।

भाषा प्रयोग का विवेचन : आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है, जबकि गोस्वामी तुलसीदास ने उस वक्त प्रचलित अवधी भाषा के माध्यम से रामकथा को जनमानस तक पहुँचाया है। रामकथा पर अधृत उपन्यासों में खड़ीबोली पर आधारित हिन्दी भाषा प्रयुक्त हुई है। वाल्मीकि की भाषा देव-भाषा संस्कृत है। भाषा काव्यात्मक, सहज और प्रवाहमयी है। तत्कालीन भाषा के माध्यम से वाल्मीकि ने उस समय की अयोध्यानगरी, तत्कालीन राजा, प्रजा, आम-जनता, ऋषि-मुनियों और राक्षसों के जीवन के क्रिया-कलापों का एक स्पष्ट सहज बिम्ब प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। उनकी भाषा काफी समृद्ध है। तुलसीदास जी ने सरल अवधी भाषा का प्रयोग कर, अवधी को काफी लोकप्रिय बन दिया है। पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है, कहीं-कहीं आलंकारिक भाषा के सौंदर्य से पाठक विभोर हो उठते हैं। सहज-सरल भाषा के प्रयोग के कारण ही 'रामचरितमानस' इतना लोकप्रिय हो गया है। भाषा के माध्यम से पात्रों का चरित्र काफी सशक्त बन पड़ा है। गोस्वामी तुलसीदास जी के महाकाव्य में नित्य चेतन-तत्त्व, व्यक्तित्त्व, चेष्टा, सांस्कृतिक, आत्माभिव्याक्ति, व्यवस्था, उपादेयता, लक्ष्य आदि से सम्बन्धित शब्द अवलोकनीय हैं। इसीलिए तो कहा गया है– 'कविता कर तुलसी न लसै, कविता लसी पा तुलसी की कला।' जनमानस की भषा का प्रयोग कर तुलसीदास जी ने अपने 'रामचरितमानस' को हर एक घर में जगह दी है।

भाषा और शिल्प किसी भी साहित्यिक कृति की अनिवार्य शर्त हैं। भाषा के अभाव में साहित्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। सधी हुई एवं जीवन्त भाषा साहित्यिक कृति को सफलता एवं सार्थकता प्रदान करती है तो साहित्यकार की निजी शैली विभिन्न शिल्पगत आयामों के माध्यम से उसे आकर्षक बनाती है। साहित्य की अन्य विधाओं की भाषा से उपन्यास की भाषा नितान्त भिन्न होती है। लेखक हमें जिस कथा-विश्व में ले जाना चाहता है, उसकी प्रतीति भाषा द्वारा ही सम्भव होती है। पात्रों और प्रसंगों को सजीव-सप्राण बनाने में भाषा का योगदान महत्वपूर्ण होता है। उपन्यास जीवन की यथार्थता को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, अत: यह आवश्यक है कि उपन्यास की भाषा जीवन व्यवहार की भाषा के निकट हो। उपन्यासकार जिस युग-विशेष के परिवेश को अपने उपन्यास में जीवन्त करना चाहता है, उसके अनुरूप भाषा-विन्यास आवश्यक हो जाता है। पात्र और प्रसंग के अनुरूप भाषा-प्रयोग में शब्द-चयन विशेष महत्वपूर्ण होता है। भाषा को प्राणवान और असरकारक बनाने के लिए लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग आवश्यक होता है।

उपन्यासकार की भाषा का गुण ऐसा होना चाहिए कि उसका एक-एक शब्द या वाक्य इतना सशक्त एवं सार्थक हो कि जिससे पाठक आन्दोलित हो उठे। उपन्यासकार की अभिव्यक्ति का पक्ष उसकी भाषा की शुद्धता, सरलता, स्पष्टता, स्वच्छता आदि गुणों से प्रतिफलित होता है। आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण में

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है, जबकि गोस्वामी तुलसीदास ने उस वक्त प्रचलित अवधी भाषा के माध्यम से रामकथा को जन-मानस तक पहुँचाया है। रामकथा पर आधृत उपन्यासों में खड़ीबोली हिन्दी भाषा प्रयुक्त हुई है। आलोच्य उपन्यासों की भाषा गद्यमयी है। विषयानुकूल, संयत, प्रांजल एवं प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया गया है। भाषा पात्रानुकूल है। रामकथात्मक उपन्यासकारों की कथा प्रकथन में प्रभावोत्पादकता, मर्मस्पर्षता एवं सजीवता के दर्शन होते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में भाषा प्रवाह का वेग सुस्पष्ट एवं संतुलित रखा है। घटनाओं को प्रवाहमय एवं गतिशील बनाया है। कहीं भी शिथिलता नहीं आने पाई है। इस प्रकार उपन्यासकारों ने अपनी भाषा-शैली की उत्कृष्टता, दक्षता एवं सिद्धहस्तता से अपने उपन्यासों को भावानुसार प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली, प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय, रमानाथ त्रिपाठी और भगवान सिंह के पौराणिक उपन्यासों की भाषा उपर्युक्त खूबियों से सम्पन है, साथ ही अपने उपन्यासों में आलंकारिकता, पात्रानुकूलता एवं मधुरस-सिक्त भिन शैलियों के द्वारा भाषा को सजाकर तथा उसे बोधगम्य बनाकर सर्वग्राह्य बनाया है।

शब्द भण्डार की दृष्टि से विवेचन : चारों उपन्यासकारों ने रामकथा पर आधृत अपने पौराणिक उपन्यासों में तत्कालीन परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है। इन पौराणिक उपन्यासों में परिवेश के अनुरूप संस्कृत शब्दों का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। संस्कृत के तत्सम सब्दों की अधिकता के साथ-साथ तद्भव एवं कहीं-कहीं देशज, आंचलिक तथा अरबी-फारसी-विदेशी के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

तत्सम शब्द : संस्कृत के वे शब्द, जो ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयोग किये जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। आलोच्य उपन्यासों में तत्सम शब्दों का खुलकर प्रयोग किया गया है। अगर कहा जाए कि उपन्यासों में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में व्यवहृत तत्सम शब्दावली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– पुत्रेष्ठि, अभिशाप, असंपृक्त, अभ्यस्त, उच्छृंखल, पदच्युत, शनै: शनै:, सम्यक्, आप्लावित, जिह्वा, अजु, अश्वारोही, कल्पनातीत, किंकर्तव्यविमूढ, अनायास, दुष्कृत्य, हतप्रभ, श्लाघ्य, अग्निकाष्ठ, कशाघात, अंधकूप, मनोनुकूल, केशविन्यास, मसृण, कुंतल, निभ्रन्ति, अंकपाश, कृतसंकल्प, शीघ्रातिशीघ्र, समीपस्थ नि:स्पंद, जिजीविशा, लाभार्जन, उपालंभ, उपयुक्त, प्राचीर, आत्मदाह, उल्लसित, अनभिज्ञ, निष्कलुष, कपोत, प्रज्ञाचक्षु, दक्ष, प्रकोष्ठ, आवास, क्लीव, क्लांत, वरीयता, पर्ववेक्षण इत्यादि।

प्रणव कुमार के उपन्यासों में व्यवहृत तत्सम शब्दावली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– अश्व, श्रेष्ठी, वारिपात्, शिरच्छेदन, कन्दर्पकांति, श्रान्त, जामातृ, मधुयामिनी, अशुप्लावित, एतदर्थ, चक्षु, प्रदक्षिणा, निश्शंक, असत्, सर्वग्रासी, देव, पाणिग्रहण, अतिथि, नैरुतर्य, शावक, पौरहित्य, वेष्टित, अवसान, सत्यान्वेषी,

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

आप्तकाम, हस्ती, सुवर्ण, व्याघ्रचर्म, प्रासाद, अविश्रांत, विप्रलब्धा, चतुर्दश, अतिक्रान्त, ऋत्विज्, त्वरित्, अश्रुसिक्त, आत्मजा, भगिनी, काष्ठ, दधि, पुष्प, संघान, ज्योतिस्नात्, फल, कन्द, समरविद्या, धर्मच्युत, भयार्थ, आगतप्राय, उन्मथित निहसृत, विताड़ित, क्रन्दन, विपर्यस्त, वैदूर्यमणि, अलभ्य, जागतिक, धारित्री इत्यादि।

रमानाथ त्रिपाठी की 'रामगाथा' में प्रयुक्त तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– प्रकाण्ड, सशस्त्र, प्रत्यंचा, निर्भीक, तपस्वी, पूर्वाभ्यास, सिद्धाश्रम, अनुष्ठान, तेजस्विनी, अधिकांश, पुष्प-वर्षा, सन्धान, शौर्य, उपदेशक, धृष्टता, जयघोष, तूणीर, सौभाग्य, स्वागत, जनपद, तपोवन, अनिष्ट, ऋषि, मन्थन, समिधा, तृप्ति, आर्तनाद, समाप्ति, तेजस्वी, अनाचार, सूक्ष्म, स्निग्ध, देव-पूजन, आम्र, उग्रता, प्रण, कौतूहल, सौन्दर्य, परित्याग, पूज्य, विधान, देव-स्तुति, उद्धार, पतिव्रता, पत्र-रचना, युद्ध, राजमार्ग, दुर्जेय, पराक्रमी, निर्दोष, आततायी, शस्त्र-धारण, गमन-शक्ति, विपत्ति, मर्यादा, निषेध, कंकण, ज्येष्ठा, चीत्कार, विप्रकन्या, सौभाग्य, अनुचर, सदैव इत्यादि।

भगवान सिंह विरचित 'अपने अपने राम' में प्रयुक्त तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– मर्मांतक, शाप, सूक्ष्म, मधुर, अग्नि-वर्षा, क्रोध, अभिशाप, चेतन, लुप्त, भव्य, अप्रिय, बाण, विषाद, अनन्य, प्रसव, वाणी, कष्ट, पीड़ा, पुष्ट, परिणाम, अन्यत्र, आखेट, शिथिल, पृथक्, विपुल, कंद-मूल, शांति, दुर्भाग्य, अतिरंजित, मंत्र, स्तुति, दंभ, गति, संदेह, विद्वान, वंदना, अनुग्रह, जिज्ञासा, पुरोहित, हितैषी, मस्तिष्क, स्नेह, प्रमाण, महर्षि, संध्या, कीर्ति, शैशव, शाश्वत, प्रतिवाद, समस्त, धर्मप्रिय, प्रसन्न, प्रयत्न, भूमंडल, रीति, समृद्धि, सम्मुख, निर्णय, आहत, विवाह, व्यग्रता, ग्रहण, मिश्रित, समस्त, कल्याण, प्रदान, प्रसन्न, उचित, निर्वाह, प्रतिशोध इत्यादि।

तद्भव शब्द : वे शब्द, जो संस्कृत के हैं, किन्तु धीरे-धीरे उनके रूप बदल गये हैं और हिन्दी शब्दों के रूप में प्रयुक्त हैं, तद्भव कहलाते हैं।

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में यत्र-तत्र तद्भव शब्द भी दिखाई पड़ते है। जैसे– नींद, धनुष, आंचल, आधा, आग, आँख, काम (कर्म), जोगन, जेठानी इत्यादि।

प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय के उपन्यासों में भी यत्र-तत्र तद्भव शब्द दिखाई पड़ते हैं। जैसे– अल्पता, दुर्निवार, विषण्णता, दयाद्रता, वैकल्पिक, भूमिलुण्ठित, मातुलालय, नदी इत्यादि।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

रमानाथ त्रिपाठी कृत 'रामगाथा' में प्रयुक्त तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– शरीर, अभ्यास, हाथी, फूल, आग, हाथ, आम, घी, दुर्ग, आँख, पट्टी, सैनिक, पेड़, डाल, सेवा, रस्सी, बेटी, तीर, मनोरथ, धूलि, व्यर्थ, परिश्रम, निरन्तर, प्रयोजन, राष्ट्र, निर्माण, सहेली, क्षमता, तेज, स्वभाव, दीपक, सटीक, मस्तक, भिखारी, जीभ, जनमत, सेवा, पेट, संयम, नियम, दासी, साड़ी, संसार, परिवार, माँ, अंगुल, प्राणी, व्यस्त, बर्ताव, ध्वनि, सींग, कन्या, चीत्कार, भाई, व्यक्तित्व, गम्भीर, आदेश, धोषणा, प्यास, पूर्वज, प्रकाश, चेष्टा, फसल, कमनीय, अपराध, धोखा, शिला, आश्रम, काँटा, लम्पट, विचलित, निष्पाप, पुरोहित, अनुष्ठान, सन्तुष्ट, हल, नोंक, दूध, धनुष, ललाट, बारात, वाहन, अनुमति इत्यादि।

भगवान सिंह के 'अपने अपने राम' में प्रयुक्त तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– सच, माध्यम, चिंता, केवट, कष्ट, रोमांच, स्वभाव, शरीर, कोलाहल, हार्दिक, आतंक, प्रस्ताव, शक्ति, राजभवन, कामना, सत्कार, विचार, आँख, स्त्री, प्रश्न, आसान, समय, कसौटी, शिकायत, प्रबल, बाग, धरती, आतंक, आहार, उद्घोष, अधिकारी, वेश-भूषा, महल, पत्नी, सार्थक, युवती, विधवा, संबल, मुखर, युवक, अंधकार, उन्माद, कातर, प्राणांतक, अवधि, विचलित, चीत्कार, संदेश, नियम इत्यादि।

देशज शब्द : जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से बन गया हो, देशज कहलाते हैं।

प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय के उपन्यासों में देशज शब्द बहुत ही कम दिखायी देते हैं। जैसे– थाली, गोपन, बरतना, बसेरा, ठोस इत्यादि।

रमानाथ त्रिपाठी की 'रामगाथा' में देशज शब्दों का बहुत कम प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– लोटा, कीड़ा, ठेस, झाड़ू, पेट, चुटकी, चूल्हा, कुदाल, खुरपी, डबडबा, चटपट, साँड़, माँझी, चक्कर, नुकीली, हिचकी, भेड़िया, घुटना, रोकटोक इत्यादि।

भगवान सिंह के 'अपने अपने राम' में प्रयुक्त देशज शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– बलाबल, चाव, मिट्ठी, चट्टान, सकपका, गड़बड़, लंपटता, पल्लू, हाव-भाव, डगमग, झंझा, सड़ी, खिंचाव, कौड़ी, चुप्पी, फंदा, बिंदु, कड़वा, झट, हिस्सा, फूट-फूट, चपेट, अटपटा इत्यादि।

अरबी-फारसी और विदेशी शब्द : उपन्यासकारों ने पौराणिक परिवेश के अनुरूप संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है, फिर भी कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्दों की झलक भी दिखाई देती है।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ अरबी-फारसी शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं– चेहरा, होश, मुस्कान, ईमान्दार, जल्दी, मुँह, शायद, हवाले, जोखिम, लापरवाही, पहचान, चाहना, बिस्तर, मरम्मत, दीवार, बेसुध, शादी, भीतर, इधर-उधर, तैनात इत्यादि।

जो शब्द विदेशी भाषाओं से ज्यों का त्यों अथवा परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रयोग में लाये गये हैं, विदेशी शब्द कहलाते हैं।

'रामगाथा' में प्रयुक्त विदेशी शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– खील, शंख-चूड़ी, बिटिया, कम्बल, प्राचीर, गोबर, फर्श, स्फटिक, पोखरी, परिन्दा, फाटक, बाँसुरी, खाड़ी, गुल्म, ईंट, नख, भस्म, पुरवा, मजबूत, इंगुदी, चट्टान, घायल, बिल्ली, कुबड़ी इत्यादि।

'अपने अपने राम' में प्रयुक्त विदेशी शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– दाई, कड़वे, तापस, क्रौंची, पोखर, टटोल, पड़ाव, नगर-श्रेष्ठि इत्यादि।

आंचलिक शब्द : किसी अंचल विशेष में बोली जाने वाली भाषा आंचलिक कहलाती है और उसमें प्रयुक्त शब्द आंचलिक शब्द कहलाते हैं।

प्रणव कुमार ने अपने उपन्यासों में गौण रूप में आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे– जल, भद्रमण्डली, बेहड़ा, भद्रगण, शिला इत्यादि।

'रामगाथा' में दण्डकारण्य के आस-पास रहने वाले ग्रामीणों की बोल-चाल की भाषा प्रयुक्त हुई है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं– पुरवा, भौजी, हंडिया, गमछा, महुआ, छप्पर, लखन, ठकुराई, बहिन, सौगन्ध, धौंस, लुगाई, लछमन, करौंदा, पत्तल, कडुख, मादल, अँबिया, पिण्ड, धौंसा, घुड़क, रसुइया, झुरमुट, मटका, चण्ट, पत्तल, मट्ठा, अलाव, छाईं-माईं इत्यादि।

मुहावरे : मुहावरा लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य का वह प्रयोग है जो किसी एक ही बोली या लिखी जाने वाली भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अभिधेय अर्थ से विलक्षण हो।

मुहावरों का पयोग दैनिक-जीवन में नित्य देखा जाता है। इनमें शब्द की लक्षणा-शक्ति का अवलम्बन लेकर गागर में सागर भरने का प्रयास किया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा सबल और प्रभावशाली बन जाती है। 'मुहावरा' अरबी भाषा के 'हौर' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। 'हौर' शब्द का शाब्दिक अर्थ है- परस्पर बातचीत करना। परन्तु सम्प्रति यह शब्द रूढ़ होकर पारिभाषिक बन गया है।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

उपन्यासकार अपनी अभिव्यक्ति को असरकारक, चोटदार, प्राणवान एवं लाघवयुक्त बनाने के लिए उपयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग करता है। रामकथात्मक उपन्यासकारों ने भी अपनी अभिव्यक्ति को साहजिक एवं सुदृढ़ बनाने के लिए यथावश्यक मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ मुहावरों के उदाहरण इस प्रकार हैं- आँख मूँदना, बातों का धनी, आँखें चौंधिया जाना, सांस फूल जाना, पैर उखड़ जाना, किये धरे पर पानी फिर जाना, छोटे मुँह बड़ी बात कहना, नाक रगड़ना, रेत की भित्ती सिद्ध होना, आकाश पाताल एक करना, फूला नहीं समाना, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना, तिलांजलि देना, गहरी नींद सो जाना, मार्ग का रोड़ा होना, बाल की खाल निकालना, सिर आँखों पर रखना, पल्ला झाड़ना, वक्ष पर साँप लोटना, ईंट का जवाब पत्थर से देना इत्यादि।

प्रणव कुमार के उपन्यासों में भी यत्र-तत्र मुहावरों का प्रयोग किया गया है। जैसे- त्राहि-त्राहि मचाना, पहेलियाँ बुझाना, झंझावात की भाँति टूट पड़ना इत्यादि।

'रामगाथा' में प्रयुक्त मुहावरों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- लंका पुरी की नाक कटना, थर-थर काँप उठना, कमर टूट जाना, आग-बबूला होना, कलेजा ठंडा नहीं होना, चट मँगनी पट विवाह, छक्के छूट जाना, मारी-मारी फिरना, सूखकर काँटा होना इत्यादि।

'अपने अपने राम' में प्रयुक्त मुहावरों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- घिग्घी बंध जाना, काठ मार जाना, शत्रु के दाँत खट्टे करना इत्यादि।

लोकोक्तियाँ : 'लोकोक्ति' शब्द का शाब्दिक अर्थ है लोक अथवा जनता की उक्ति या कथन। डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार- लोक साहित्य प्रकृति के ज्ञान की भाँति सार्वभौम है। न उसका देशकाल से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है जितना अन्य साधारण साहित्य का होता है। सदा बहने वाले वायु और सूर्य के प्रकाश के समान लोकोक्तियाँ मानव मात्र की सम्पत्ति हैं और उनके रस का स्रोत सब के लिए खुला रहता है।

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं– बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे, कोई साँपनाथ है तो कोई नागनाथ, न उगलते बने न निगलते, जब तक साँस तब तक आस, छोटा मुँह बड़ी बात, साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे, फल शाखा से टूटकर नीचे न गिरे तो कंगाल की झोली कैसे भरे, आ बैल मुझे मार इत्यादि।

'रामगाथा' में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं– कुत्ता दो-दो सिंहों के सामने टिकना, जीभ क्यों नहीं गलना, न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी इत्यादि।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

'रामगाथा' में लोक-गीतों की भरमार है। लोक-गीतों में उस मिट्टी की सौंधी-खुशबु छिपी है। 'चैती' अपने सत्तू पंडित के सावन का गीत गाती है–

"आज मोहि रघुबर की सुध आई।

कौन बिरछ तर भींजत हुइहैं राम लखन दोउ भाई।।

आज मोहि रघुबर की सुध आई।

सीता बिना मोरी सूनी रसुइया लछमन बिनु ठकुराई।।"[1]

सरल ग्रामीणों के बीच रहकर सीता भी उन्हीं की भाषा में गीत गा उठती हैं–

"दाई के रोये नदिया बहत है

ददा के रोये तलाव।

भाई के रोये डबरा भरत है

भोजी के नयन कठोर।।"[2]

उपन्यास जीवन की यथार्थता को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अत: यह आवश्यक है कि उपन्यास की भाषा जीवन-व्यवहार की भाषा के निकट हो। रामकथाकारों के पौराणिक उपन्यासों में व्यवहृत मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग इस बात का प्रमाण है।

भाषा की पात्रानुकूलता : वाल्मीकीय रामायण आदिकाव्य है। इसकी भाषा शुद्ध संस्कृत है। इसमें मर्यादापुरुषोत्तम राम की भाषा मर्यादित है। पतिव्रता सीता के द्वारा कहे गये शब्द आदर्श नारी के गुणों का बखान करते हैं। भरत अपनी भाषा के द्वारा एक आदर्श भाई होने का परिचय देते हैं, लक्ष्मण की भाषा, एक समर्पित भव्य-पुरुष की भाषा है तो सुग्रीव की भाषा ज्यादा परिपक्व नहीं है। हनुमान के शब्द, सेवा-भाव से ओत-प्रोत हैं। रावण की भाषा कुटिलता से ओत-प्रोत है। वाल्मीकीय रामायण में राजा दशरथ की भाषा से वात्सल्य रस टपकता है। राजा दशरथ कैकेयी से कहते हैं–

"नृशंसवृते व्यसनप्रहारिणि प्रसह्य वाक्यं यदिहाद्य भाषसे।

न नाम ते तेन मुखात् पतन्त्यधो विशीर्यमाणा दशना: सहस्रधा।।

न किंचिदाहाहितमप्रियं वचो न वेत्ति राम: परुषाणि भाषितुम्।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

कथं तु रामे ह्यभिरामवादिनि ब्रवीषि दोषान् गुणनित्यसम्मते।।"[3]

वाल्मीकीय रामायण में राम की मातृ-भक्ति का प्रदर्शन विशद रूपेण किया गया है। वे अपनी माता कैकेयी से कहते हैं कि मैं बिना पिता के कहे भी तुम्हारी आज्ञा से ही वन चला जाऊँगा।

"अनुक्तोäऽप्यत्रभवता भवत्या वचनादहम्।

वने वत्स्यामि विजने वर्षाणीह चतुर्दश।।"[4]

क्योंकि राम प्रतिज्ञा पालन करने वाले, माता-पिता के वचनों को न टालने वाले और धर्मावलम्बी पुरुष हैं। उन्होंने स्वप्न में भी माता-पिता के विरुद्ध आचरण नहीं किया इसका उन्हें आत्म-विश्वास है।

वाल्मीकीय रामायण में लक्ष्मण वन-गमन का समाचार सुनते ही अत्यन्त क्रुद्ध हो उठते हैं तथा अवसरानुकूल अपना क्षोभ प्रदर्शन करते हुए अपने पिता के चरित्र की कटु आलोचना करते हैं। इतना ही नहीं वे क्रोध की पराकाष्ठा पर पहुँचकर अनेक गर्वोक्तियों एवं कूटक्तियों को कहने लगते हैं।

"निर्मनुष्यामिमां सर्वामयोध्यां मनुजर्षभ।

xxx xxx xxx

सर्वांस्तांश्च वधिष्यामि मृदुर्ही परिभूयते।।"[5]

वाल्मीकीय रामायण में भरत राजनीति, कुलनीति आदि के तर्कों द्वारा कैकेयी के प्रति अपने शाप द्वारा तिरस्कार प्रदर्शित करते हुए अपना कटु विरोध दिखाते हैं। केवल इतना ही नहीं दंड निर्धारण करने में भी संकेत नहीं करते।

"सा त्वमग्निं प्रविश वा स्वयं वा विश दंडकान्।

रज्जुं बद्धवाथवा कण्ठे नहि तेऽन्यत् परायणम्।।"[6]

वाल्मीकीय रामायण में कैकेयी के चरित्र का विकास अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। मन्थरा से प्रोत्साहित एवं प्रेरित होने के पश्चात् कैकेयी की प्रकृति में नितान्त परिवर्तन हो जाता है।

"निश्चित्य मनसा कृत्यं सा सम्यगिति भामिनी।

मन्थरायै शनैः सर्वमाचचक्षे विचक्षणा।।"[7]

स्पष्ट है कि वाल्मीकीय रामायण में पात्रों के मनोनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

उसी प्रकार 'रामचरितमानस' में भी पात्रों के व्यक्तित्व के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। तुलसीदास जी पत्रानुकूल भाषा के प्रयोग में उच्चकोटि के कवि माने गये हैं।

कैकेयी की भाषा में उग्रता छलकती है। यथा–

"कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया।।

देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं।।"[8]

राम की भाषा में चन्दन-की-सी शीतलता है–

"धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू।।

चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें।।"[9]

लक्ष्मण के मुँह से उच्चारित भाषा में राम के प्रति प्यार झलकता है–

"जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।।

मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबन्धु उर अंतरजामी।।"[10]

इस प्रकार 'रामचरितमानस' में भाषा पात्रानुकूल के साथ-साथ सशक्त भी है।

रामकथात्मक उपन्यासकार प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनका व्यक्तित्व उनके भाषा-सौष्ठव से प्रतिफलित हो जाता है। लेखकों की भाषा शालीनता का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी शब्द-योजना एवं वाक्य-विन्यास से उनकी दक्षता एवं सिद्धहस्तता का बोध होता है। उपन्यासों के मुख्य पात्र आर्यों की संस्कृत युक्त भाषा का प्रयोग करते हैं जो उनके पात्रों के अनुकूल है।

भाषा सहज, सरल और प्रवाहमयी है। भाषा में शुद्ध-तत्सम शब्दावली का आधिक्य है। कहीं-कहीं संस्कृत-निष्ठ शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। वाक्य-विन्यास सुगठित और सधा हुआ है। छोटे-छोटे वाक्यों में गम्भीर भाव-विवेचन पूर्ण सामर्थ्य है। व्याकरण के नियमों का यथा-संभव पालन हुआ है। विराम चिह्न आदि की समुचित व्यवस्था पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। विचारों में सुसम्बद्धता है। चिन्तन प्रधान विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं भावात्मक शैली भी देखी जा सकती है। बोल-चाल के सामान्य शब्दों का सफल-प्रयोग कर ग्रामीण-जीवन के क्रिया-कलापों का एक सुन्दर खाका खींचा गया है। इस प्रकार प्रमुख, गौण एवं कल्पित पात्रों की भाषा भी उनकी पात्रता के अनुकूल है। इनके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

कोहली ने अपने पात्रों के आक्रोश, खीझ और झुँझलाहट को बहुत ही मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया है। राक्षसों के अत्याचारों को खत्म करने के लिए ब्रह्मर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ की राजसभा में आकर उनसे राम को माँगते हैं, तब सम्राट कहते हैं कि राक्षसों का वध करने के लिए मैं अपनी सेना के साथ आऊँ। तब विश्वामित्र उन पर भरपूर कशाघात करते हुए कहते हैं– "इतना कष्ट न करो, सम्राट! मैं तुम्हें और तुम्हारी चतुरंगनी सेना को नहीं लेने आया हूँ। तुम्हारी सेना इतनी समर्थ होती तो मुझे प्रार्थना करने के लिए यहाँ तक क्यों आना पड़ता है?"[11]

अजगव खण्डन का समाचार सुनकर क्रोधित हुए परशुराम राम-लक्ष्मण को मार देने की धमकी देते हैं तब, लक्ष्मण उन पर अपना खीझ प्रकट करते हुए कहते हैं–

"आप काफी पिछड़े हुए हैं। आप न तो आधुनिक हैं, न वर्तमान परिस्थितियों से परिचित ही लगते हैं। आजकल किसी को आँखें दिखाकर अपना रौब नहीं मनवाया जा सकता। आँखें ही तो हैं, उनसे देखिए- कोई रौब दिखाने का अनुमति पत्र तो है नहीं। ठीक है न?"[12]

कोहली ने सीधी सरल भाषा में विभिन्न पात्रों की मन:स्थिति का वर्णन किया है।

"वरन् राम के रूप में वे स्वयं ही युवावस्था की ओर बढ़ रहे थे।...अपनी आरम्भिक युवावस्था में दशरथ का भी कुछ ऐसा ही रूप था। लगभग इतनी ही लम्बाई। ऐसी ही तीखी नाक और बड़ी-बड़ी गुलाबी आँखें। हाँ, दशरथ का वर्ण ऐसा श्यामल नहीं था– यह राम को कौसल्या से मिला था। और दशरथ में ऐसा कठिन आत्मविश्वास भी नहीं था, जैसा राम में है...राम को देखकर, उन्हें कहीं यह नहीं लगता कि वे क्षीण, दुर्बल और वृद्ध हो रहे हैं। दशरथ को लगता है कि राम के रूप में वे स्वयं सेना पर नियन्त्रण कर रहे हैं, स्वयं मंत्रियों के साथ मंत्रणा कर रहे हैं, स्वयं प्रशासन की देखभाल कर रहे हैं, राम, दशरथ के व्यक्तित्व के अंतर्गत तत्व हो गये हैं।"[13] राजा दशरत की मन:स्थिति की अभिव्यक्ति के अन्तर्गत राम के सौन्दर्य और उनकी कार्य-दक्षता का वर्णन करना, लेखक की भाषा-दक्षता का परिचायक है।

साथ ही नरेन्द्र कोहली ने अपने पौराणिक उपन्यासों में अनेक पात्रों की मन:स्थिति को विश्लेषित कर अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया है। रामकथा पर आधृत 'दीक्षा' उपन्यास के आरम्भ में कोहली ने ऋषि विश्वामित्र की मन:स्थिति को निरूपित किया है। "सहसा विश्वामित्र को लगा उनके मन में राक्षसों के विरुद्ध जो क्षोभ है, उससे भी अधिक क्षोभ आर्यावर्त के राजाओं के विरुद्ध है। आज वह समय क्यों नहीं है, जब सारी सेनाएँ एक ही सेनापति के अधीन युद्ध करती थीं? क्यों आज भी प्राचीन काल के भरत, युत्सु, जहनु, भृगुजन के प्रमुख एक ही ग्राम में रहकर न्यायपूर्ण संयुक्त शासन नहीं कर सकते? ऐसा क्यों है कि विभिन्न वर्ग

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

एक दूसरे से इतनी दूर जा पड़े हैं कि वे लोग रक्षात्मक युद्ध भी मिलकर नहीं कर सकते?"[14] यहाँ विश्वामित्र का जागरूक मन अपने समाज की एक विकट समस्या से चिन्तित है कि आर्यावर्त के छोटे-छोटे राजा अपने कर्तव्य, साहस एवं दूरदर्शिता से दूर हटकर भोगी और विलासी होते जा रहे हैं और दूसरी ओर रावण और उसके साथी राक्षस आर्यावर्त में हाहाकार मचा रहे हैं। ऐसी स्थिति में जब कोई राजा दूसरे की मदद नहीं कर रहा है, अपनी प्रजा की रक्षा से मुँह मोड़ रहे हैं, विश्वामित्र का आहत और पीड़ित मन इस समस्या पर सोचते हुए चिन्तित लग रहा है। उपन्यासकार ने इस मन:स्थिति को आगे बढ़ाते हुए लिखा है– "ऐसी स्थिति में विश्वामित्र क्या करेंगे? अगस्त्य क्या करेंगे? वाल्मीकि क्या करेंगे? भरद्वाज क्या करेंगे? पर कर्म का समय भी यही है। विश्वामित्र चूक नहीं सकते। कोई कुछ नहीं करेगा, तो विश्वामित्र को ही कुछ करना होगा।...क्या करें विश्वामित्र? किसके पास जाएँ? दशरथ के पास? जनक के पास? दोनों के पास? किसी के भी पास जाने का कोई लाभ नहीं। क्या आर्यावर्त रावण के विरुद्ध संगठित नहीं हो सकता? क्या दशरथ और जनक में मैत्री नहीं हो सकती? प्रश्न! प्रश्न!! प्रश्न!!! विश्वामित्र को कुछ करना ही होगा उद्यम-शून्य हो यहाँ बैठे रहने का क्या लाभ? क्या उन्होंने सिद्धाश्रम राक्षसों के भक्षण के लिए आहार उपलब्ध कराने के लिए बनाया था?...नहीं उन्हें सक्रिय होना होगा। राजा सक्रिय न हो तो ऋषि ही सक्रिय क्यों न हों?"[15] यहाँ उपन्यासकार ने विश्वामित्र के मन में चल रहे संघर्ष को निरूपित किया है, जिससे युगीन परिवेश या समस्या की झाँकी भी मिल जाती है। विश्वामित्र की मन:स्थिति को निरूपित करने में कोहली की भाषा पात्रानुकूल, प्रवाहमय, सरल, साहजिक और सार्थक प्रतीत होती है, वह कहीं भी कृत्रिम और अवरुद्ध नहीं जान पड़ती।

उसी प्रकार दास-प्रथा में पिता-पुत्री का जीवन गुजरने पर लेखक ने दृष्टि डाली है। यह उस समय की युगीन परिस्थितियों का एक अमानवीय और असंस्कृति का प्रतीक है। सुमेधा जो एक भोली-बाली भील जाति की लड़की है वह अपने स्वामित्व को अत्यन्त विश्वास के साथ अपना कर्तव्य मानकर निभाती है। ऐसे भोले पात्रों का चित्रण लेखक ने सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है। भाषा नितान्त पात्रानुकूल है।

"अच्छा! तुम लोग इसके दास क्यों हो? सीता ने बातों की दिशा मोड़ी।

मेरे पिता को किसी अपराध के लिए स्वामी ने आर्थिक ढंड दिया था। पिता के पास धन नहीं था। स्वामी ने ही पिता को ऋण दिया। पिता वह ऋण चुका नहीं पाये हैं। इसलिए वे स्वामी के दास हुए, उनकी पत्नी होने के कारण मेरी माँ और पुत्री होने के कारण मैं उनकी दासी हुईं। दासों की संतान भी तो दास ही होती है।

सुमेधा अपना ज्ञान प्रदर्शित कर प्रसन्न थी।

तुम और तुम्हारे माता-पिता-तीनों क्या काम करते हो?

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

जो स्वामी कहें। सुमेधा ने बताया, पानी लाना। जमीन खोदना। पेड़ काटना। खाना पकाना। बर्तन माँजना। स्वामी और उसके परिवार की सेवा करना। जो भी स्वामी कहें।

तुम्हारा विवाह होगा?

सुमेधा फिर संकुचित हो गयी, यह तो स्वामी की इच्छा पर है। वे चाहें मेरा विवाह कर दें। वे चाहें मुझे किसी को दे दें। वे चाहें मेरा भोग करें। वे चाहें मुझे खा जाएँ।"[16]

जब शूर्पणखा के कान में राम के बलवान और सुदर्शन होने की बात पड़ती है तब उसका हृदय काम-ज्वाला से धधक उठता है। उसके मन में राम को देखने और उसे रथि-निमंत्रण के लिए स्वागत करने की तमन्ना समय-समय में बढ़ती जाती है। इसी कामाग्नि में वह अपने विरह को व्यक्त करती है।

"तुम क्या चाहते हो?

अभी कुछ दिनों के लिए तीव्रगामी सैनिक रथों को, सैनिक प्रयोजनों में ही नियोजित रहने दो।

कब तक?

राम के वध तक।

शूर्पणखा की आँखें उठीं तो खर को लगा, उनकी धधकती ज्वाला उसे नष्ट कर डालेगी, पहले मेरे आदेश का पालन किया जाए। उसने सीधे खर की आँखों में देखा, मेरी स्पष्ट आज्ञा है कि अभी राम पर आक्रमण न किया जाए। बहन इसमें हस्तक्षेप मत करो, यह सैनिक विषय है।

सैनिक विषयों को भी शूर्पणखा भली प्रकार समझती है। शूर्पणखा का स्वर उग्र तथा रुक्ष था, रावण से कुछ धन प्राप्त करने के लिए झूठे युद्धों का नाटक बंद किया जाए।"[17]

कोहली के 'युद्ध-1' उपन्यास में विभीषण और सरमा की मानसिक स्थिति के साथ-साथ शूर्पणखा के मनोभाव का भी चित्रण किया गया है।

"कौन-सा मोर्चा मार आए राजाधिराज?

बहन पति का अपहरण नहीं कर सकी तो भाई पत्नी का अपहरण कर लाया।

ओह! वैदेही का अपहरण!

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

हाँ! सूचना मिल गयी?

यह सूचना तो लंका की हवा में तैर रही है। सरमा बोली, पर मैंने सुना है कि इस अपहरण के लिए राजाधिराज को उकसाने वाली बहन शूर्पणखा भी इससे प्रसन्न नहीं है, और बहन मंदोदरी की भी इस विषय में राजाधिराज से पर्याप्त कहा-सुनी हुई है।

भाभी का तो मुझे पता नहीं। विभीषण बोले, किन्तु अपनी बहन के विषय में निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि वह इससे प्रसन्न नहीं होगी। बहन की ईर्ष्या की कोई सीमा नहीं।

बहन तो ईर्ष्या के कारण व्यग्र है। आप क्यों उद्विग्न हैं? आपके मन में तो ईर्ष्या नहीं है? सरमा मुसकरा रही थी।

मैं समाज में फैलते पशुता के इस विष के कारण उद्विग्न हूँ। विभीषण बोले, इस विष के कारण संसार में आज कोई भी, कहीं भी सुरक्षित नहीं है।

आप तो हैं...।"[18]

उसी प्रकार कोहली के 'युद्ध-2' उपन्यास में भी संतरियों के स्वभाव को उभारने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है।

"तू नया है, इसलिए बहुत डरता है। पहले ने कहा, हम सब निर्भीक हैं। लंका में कोई काम नहीं करता बस पैसा काम करता है।

मैं तो डरता ही हूँ, क्योंकि नया-नया काम मिला है, दूसरा बोला, किन्तु तुम्हारा राजाधिराज क्यों डरता है?

राजाधिराज और भय! तू नशे में तो नहीं है?

नहीं! नशे में तो तुम हो। अपने राजाधिराज की शक्ति के मद में भूले हो। दूसरा बोला, इतनी-सी बात नहीं सोच सकते कि रावण डरता नहीं है तो अपनी सेना ले, सागर के उस पार जाकर राम से लड़ता क्यों नहीं? किस बात की प्रतीक्षा में बैठा है, गवाक्ष और द्वार बंद करके? लंका के चारों द्वारों पर पहरा क्यों बढ़ाया गया है? नगर में सैनिक परिक्रमा क्यों करते रहते हैं? अरे, न होता उस पार, सागर के इस पार ही व्यूह बांधता।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

तू अकिंचन-सा संतरी लगा है राजाधिराज की आलोचना करने। इतनी ही राजनीति समझा था तो यहाँ चाकरी करने क्यों आया! कोई मंत्री-पद संभाल।"[19] स्पष्ट है कि कोहली की भाषा पात्रों के मनोनुकूल, सरल एवं सरस बन पड़ी है।

प्रणव कुमार का व्यक्तित्व उनकी सौष्ठव भाषा से प्रतिफलित हो जाता है। लेखक की भाषा शालीनता का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी शब्द-योजना एवं वाक्य-विन्यास से उनकी दक्षता एवं सिद्धहस्तता का बोध होता है। कथा के मुख्य पात्र आर्यों की संस्कृतयुक्त भाषा का प्रयोग करते हैं, जो उनकी पात्रता के अनुकूल है। यद्यपि कुछ स्थानों पर भाषा पात्रों के अनुकूल नहीं लगती। फिर भी राजकीय ज्ञान से ओत-प्रोत एवं सम्भ्रान्त पात्रों की संस्कृतमय भाषा स्वाभाविक लगती है। 'अमृतपुत्र' उपन्यास में परशुराम, राम और दशरथ की भाषा बहुत-ही शालीन और पात्रों के अनुकूल संजोयी गयी है।

"परशुराम ने दशरथ के इस सत्कार का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने राम को सम्बोधित किया, मेरा संवाद आपसे होना है। जब से मुझे जनक के धनुष सुनाभ के भंग होने की सूचना मिली, मेरा चित्त अशांत हो उठा है।

आपसे संवाद का अधिकारी तो यह दास नहीं है किन्तु आपकी आज्ञा से आपके प्रश्नों का उत्तर मैं अवश्य दूँगा, महात्मन। मेरी इच्छा है कि आपके साथ मेरा सम्मुख समर हो! परशुराम के स्वर में गर्जना थी।

दशरथ भयभीत हो गए। उन्होंने विवेदन किया, इस बालक के साथ युद्ध में प्रवृत्त होना आपको शोभा नहीं देता, महात्मन!"[20]

लेखक के 'पदातिक' उपन्यास में मंथरा की ज्वलंत भाषा का आयोजन किया गया है।

"मंथरा ने अस्वीकृति में मस्तक हिलाया, मुझे मिथ्या भाषण से क्या लाभ, पुत्री? राम सिंहासन पर आसीन हो जाए या भरत, मैं तो दासी ही रहूँगी, किन्तु राम का यदि वास्तव में अभिषेक हो गया, मेरी प्रिय पुत्री कैकेयी को कण्टक-शय्या पर ही शयन करना पड़ेगा। यह देखकर दासी मंथरा को कितनी पीड़ा होगी, वह तू अवश्य ही समझ सकती है।"[21]

उसी प्रकार 'पंचवटी' में लेखक ने अनार्य पुरुषों के असामाजिक पालन के जरिये कबंध की ओजमयी भाषा का प्रयुक्त किया है।

"मैं कबंध हूँ। मेरे राज्य में यात्रा करने से पूर्व कर देना आवश्यक नियम है। इस नियम के उल्लंघन का साहस कोई नहीं करता।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

यदि हमारे समक्ष कोई धन होता, कृपापूर्वक आप हमें अग्रसर होने का अवसर दें।

अब तो और भी विलंब होगा!

मैं कुछ समझा नहीं।

यदि तुम में कर देने की शक्ति नहीं है, मेरा दास बनकर कुछ समय तुम्हें मेरी सेवा करनी होगी। मेरी प्रसन्नता के उपरांत ही तुम्हें मुक्त किया जा सकेगा।"[22]

लेखक के 'अरण्यकाण्ड' उपन्यास में स्वयंप्रभा की भाषा नारी-प्रकृति के अनुकूल आयोजन किया गया है। जैसे– "विवाह तो हुआ था। स्वयंप्रभा ने उत्तर दिया, किंतु मेरे पति ने विवाह के उपरांत शरीर त्याग दिया था। इसके उपरांत मैं पूर्ण निष्ठा से तपस्या करती रही।

मैं समझ सकता हूँ कि आपका जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा। महावीर बोले।

आपने सत्य समझा है। आप समझ सकते हैं कि संघर्ष में ही नारी की सत्ता खंडित हो जाती है। स्वयंप्रभा बोली।"[23]

रमानाथ त्रिपाठी की 'रामगाथा' में पात्रों की भाषा प्रांजल एवं प्रवाहपूर्ण है। भाषा पात्रानुकूल है। रावण की भाषा कुटिलता से ओत-प्रोत है। जैसे– "तुम लोग इसे अशोक वन में ले जाओ। पहले इसे डराना-धमकाना, फिर मीठे वचन बोलकर समझाना। जिस तरह जंगली हथिनी को पकड़कर उसे साधा जाता है, उसी तरह तुम्हें इसे साधना है।"[24]

उसी प्रकार जैसे दण्डकारण्य में रहने वाली चैती, सीता से कहती है– "भौजी, सावन का गीत सुनोगी? वह सत्तू पण्डित सुतीच्छन के आश्रम से लौट रहा था। रिमझिम पानी बरसने लगा तो वह हमारी बस्ती के छप्पर के नीचे आ खड़ा हुआ।

सुतीच्छन नहीं सुतीक्षण।

हाँ - हाँ वही।"[25]

'अपने अपने राम' की भाषा प्रवाहमयी और मंजी हुई है। बोल-चाल के सामान्य शब्दों का प्रयोग बहुतायत में हुआ है। वाक्यों में गांभीर्य भाव है। व्याकरण के नियमों का यथा-संभव पालन किया गया है। संस्कृत-निष्ठ शब्दों का प्रयोग बहुत किया गया है। भाषा पात्रानुकूल है जैसे धर्म-महासभा में शंबूक के कहे ये

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

वाक्य पात्रानुकूल भाषा के उदाहरण हैं– "ऋषिवर, राम का ब्रह्मद्वेषी होना तो समझ में नहीं आता, परंतु आपके रामद्वेष के पीछे राजद्वेष की भावना अवश्य दिखाई देती है।"[26]

भाषा पात्रानुकूल होने के साथ-साथ विषयानुकूल, संयत और प्रांजल है। धर्म-महासभा में लच्छेदार भाषा का प्रयोग होने से ब्राह्मणों के बीच के वाद-विवाद बड़े रोचक और सजीव बन पड़े हैं। जगह-जगह भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं चिन्तन प्रधान विवेचनात्मक शैली का प्रयोग भी किया गया है। वाक्य-विन्यास सुगठित और सधा हुआ है। कहीं-कहीं भाषा के प्रभाव से संवाद दिल को छू जाते हैं।

'अपने अपने राम' में लव और कुश की भाषा बाल-सुलभ-माधुर्य से ओत-प्रोत है–

"जब वह कंठ से फूटता है तो लोग उसे कविता कहते हैं, आँखों से झरता है तो आँसू और जब एकतोर से फूटता है, तो संगीत।"[27]

वशिष्ठ, उपन्यास में 'ब्राह्मणवाद' का ढंका बजाते नजर आते हैं– "ब्राह्मण का मान-दान और दक्षिणा से नहीं होता। धन संपदा का ब्राह्मण के लिए कोई मोल नहीं। श्री उसे शोभा नहीं देती। वह तो धर्म के लिए जीता है और धर्म ही उसका प्राण है।"[28]

विश्वामित्र की भाषा बुद्धिजीवियों की भाषा है– "अपनी श्रेष्ठता की भूख में आप जैसों ने समाज के साथ ही कसाइयों जैसा व्यवहार नहीं किया, जिसे आप परम ब्रह्म कहते हैं उसके साथ भी कसाइयों जैसा व्यवहार किया। उसके भी टुकड़े-टुकड़े कर डाले। मुनिवर हमारे सिर पर जितना ज्ञान लदा है, उससे कई गुना पातक लदा है - समाज से लेकर ईश्वर तक का अपघात करने का पातक। अब भी समय है, हम इसका प्रायश्चित करें।"[29]

स्पष्ट है कि चारों लेखकों ने अपने उपन्यासों में पात्रों के मनोनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उक्त उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

आलंकारिक भाषा : वाल्मीकीय रामायण के वर्ण्य विषय में, चमत्कारिक एवं आकर्षक रूप, अलंकारों के द्वारा अभिव्यक्ति किया गया है। अलंकार ही काव्य का जीवातु कहा गया है। अनुप्रास की छटा एवं अनवरत प्रवाह तो समस्त काव्य में ही दृष्टिगत है। वाल्मीकि ने अपनी रामायण में आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। आदिकाव्य की आदि पंक्ति अनुप्रास से प्रारम्भ होती है।

अनुप्रास

"तप:स्वाध्यायनिरंत तपस्वी वाग्विदां वरम्।"[30]

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

साथ ही वाल्मीकीय रामायण में उपमा का सर्वाधिक प्रयोग विविध रूपों में मिलता है। इसी कारण वे अपनी उपमाओं के लिए संस्कृत में सुविख्यात हैं।

उपमा

"तासां तेनातिकान्तेन वचनेन सुवर्चसाम्।

मुखपद्मान्यशोभन्त पद्मानीव हिमात्यये।।"[31]

अर्थात् उस अतिप्रिय वचन से बड़ी तेजस्विनी उन राजपत्नियों के मुख हिमऋतु के बीतने पर कमल की भाँति शोभित हुये। उसी प्रकार–

"तदा तु बुद्ध्वा भ्रुकुटीं भ्रुवोर्मध्ये नरर्षभ:।

xxx xxx xxx

बभौ क्रुद्धस्य सिंहस्य मुखस्य सदृश्य मुखम्।।"[32]

अर्थात् भृकुटि चढ़ाए लक्ष्मण बिल में स्थित सर्प के समान स्पष्ट होकर श्वास लेने लगे...उनका क्रोधी मुख सिंह के समान हो गया। ऐसे ही–

"विरराज महाबाहुश्चित्रया चन्द्रमा इव।"[33]

अर्थात् महाबाहु राम चित्रा के साथ चन्द्रमा के समान सुशोभित हुये।

उपमा के अतिरिक्त साम्य-मूलक अनेक अलंकारों पर भी वाल्मीकि को समानाधिकार प्राप्त है। उत्प्रेक्षा, उदाहरण, रूपक, संदेहादि के पर्याप्त उदाहरण रामायण में सहज प्राप्य हैं।

उत्प्रेक्षा

"स सम्प्रहारस्तुमुलो रामत्रिशिरसोस्तदा।

सम्बभूवातिबलिनो: सिंहकुञ्जरयोरिव।।"[34]

रूपक

"जलाघाताट्टहासोग्रां फेननिर्मलहासिनीम्।

क्वचिद् वेणीकृतजलां क्वचिदावर्तशोभिताम्।।"[35]

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

इस प्रकार, "आदिकावि का यह समग्र काव्य ही कविता के सच्चे रूप को प्रकट कर रहा है। वाल्मीकीय रामायण मनोरम उपमाओं तथा उत्प्रेक्षाओं का एक विराट भव्य प्रासाद है।"[36]

डॉ.उदयभानु सिंह के अनुसार तुलसी का काव्य अलंकारों का अनन्त रत्नाकर है। उसी प्रकार पं.हरिऔध जी के अनुसार "'रामचरितमानस' की कोई चौपाई भले ही बिना उपमा के मिल जाये, किन्तु पाठकों को कोई पृष्ठ कठिनता से मिलेगा जिसमें किसी सुन्दर उपमा का प्रयोग न हुआ हो।"[37]

उसी प्रकार "गोस्वामी जी श्लेष, यमक मुद्रा आदि खेलवाड़ों के फेर में एक तरह से बिल्कुल नहीं पड़े हैं। इसका मतलब यह नहीं कि शब्दालंकार का सौन्दर्य उनमें है ही नहीं। ओज, माधुर्य आदि का विधान करने वाले वर्ण विन्यास का आश्रय उन्होंने लिया है। उनकी रचना शब्द सौन्दर्य पूर्ण है। अनुप्रास के तो वे बादशाह थे।"[38] 'रामचरितमानस' के कतिपय अलंकारों के उदाहरण इस प्रकार हैं। गोस्वामी जी भावोत्कर्ष व्यंजक अलंकार का प्रयोग इस प्रकार करते हैं।

"सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ।

जौं मैं राम तो कुल सहित कहिहि दसानन आइ।।"[39]

इस पर्यायोक्ति में राम की छीनता एवं सुशीलता अभिव्यंजित है। उसमें संकोच एवं शिष्टता भी समाविष्ट है। 'राम' शब्द स्वयं अर्थगर्भित है।

उसी प्रकार 'रामचरितमानस' में भी रूप का अनुभव तीव्र करने में सहायक अलंकारों का अपरिमित प्रदर्शन है। सादृश्य मूलक अलंकारों में उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षादि तो सर्वप्रमुख उदाहरण हैं।

उपमा

"नीला सरोरुह श्याम तरुन अरुन बारिज नयन।

करहु सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर नयन।"[40]

जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में कालिदास की प्रसिद्धि उनकी उपमाओं के कारण है, उसी प्रकार हिन्दी में तुलसी भी बिना उपमा के आगे बढ़ते ही नहीं। तुलसीदास जी ने मनोभावों और मनोवेगों के चित्रण की मार्मिकता को उत्प्रेक्षा के माध्यम से ही व्यंजित किया है।

उत्प्रेक्षा

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

"सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई।।

xxx xxx xxx

सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला।।"[41]

रूपक

तुलसी रूपकों के तो सम्राट ही हैं। जहाँ छोटे-छोटे रूपकों की भावपूर्ण व्यंजना हुई है, वहीं सांग रूपकों की भी सुन्दर योजना है। श्लेष पुष्ट रूपक की एक सुन्दर छटा–

"संपति चकई भरत चक मुनि आयस खेलवार।

तिहि निसी आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार।।"42

अतिशयोक्ति

"राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार।

फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार।।"[43]

इस प्रकार, मानस में अलंकार की योजना द्वारा नायक के विविध गुणों का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। साथ ही लोक व्यवहार मूलक अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि तुलसी ने लगभग सभी प्रचलित अलंकारों का प्रयोग किया है जिनका प्रयोग करते समय उन्होंने अपनी काल्पनिक सूझ-बूझ और श्रेष्ठ-प्रतिभा का भी परिचय दिया है। इस प्रकार, रामायण एवं मानस में आलंकारिक भाषा का सशक्त प्रयोग हुआ है।

पद्य ही नहीं गद्य में भी अलंकारों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण तथा क्रिया का तीव्र अनुभव कराने में अलंकार सहायक सिद्ध होते हैं। नवीन और उपयुक्त उपमानों के प्रयोग से भाव या वर्ण्य-विषय को रमणीय, सम्प्रेषणीय एवं रसप्रद बनाया जा सकता है।

नरेन्द्र कोहली ने अपने पौराणिक उपन्यासों में नवीनतम उपमानों का प्रयोग कर भाषा की रमणीयता एवं सम्प्रेषणीयता को बढ़ा दिया है। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त आलंकारिक भाषा के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

उपमा

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

नक्षत्र की भयविदीर्ण मृत पुलतियाँ कहीं उनके मन में जलती लौह-शलाकाओं के समान चुभ गई थीं।[44]

राजप्रसाद से दूर वन में, अपनी पत्नी से वंचित, आठों प्रहर मृत्यु के त्रास से पीड़ित, आखेटक कुत्तों से घबराए हुए मृग के समान समय काटा था उन्होंने।[45]

बुद्धि तो तुम लोगों की चंचल हरिण के समान कुलांचे भर रही है।[46]

वह विकट ध्वनि कर रहा था, और एक विराट दैत्य के समान, धुएँ के भयंकर मेघ उगल रहा था।[47]

रूपक

ये राजा, सम्राट, सेनापति, सामंत विलास की चर्बी आँखों पर चढ़ाए आश्वस्त बैठे हैं।[48]

राक्षसों के भय का कुहरा मिट गया था।[49]

सत्ताधारियों और उनके पुत्रों के अत्याचारों की कथा सुनकर मेरे मन में घृणा की आग धधकने लगती है।[50]

उत्प्रेक्षा

शिव-धनुष अब जड़ नहीं था, वह सक्रिय हो उठा था, मानो राम के इंगित के अनुसार उसकी प्रत्यंचा चढ़ती जा रही थी।[51]

दृष्टान्त

मदिरा कुछ इस प्रकार पीते थे, जैसे अगस्त्य ने सागर पी डाला था।[52]

पहले तो पानी कहीं ठहरता ही नहीं था, मंदाकिनी की धारा में पुन: मिलने के लिए, किसी विरही के समान भागता चला जाता था।[53]

वस्तुत: प्रणव कुमार की सबसे महत्वपूर्ण पहचान उनके द्वारा प्रयोग की गई भाषा की अलंकारिता है। आलंकारिक शब्दों के एवं वाक्यों के संयोजन से लेखक के प्रकथन में चार चाँद लग जाते हैं। लेखक के चरित्र मुख्यत: सम्भ्रान्त वर्ग के हैं, चाहे वह राक्षस जाति के अथवा वानर जाति के क्यों न हो। मुख्य पात्र राज परिवारों से सम्बन्धित हैं। अत: उनके द्वारा प्रयोग की गई भाषा की आलंकारिकता अविश्वसनीय नहीं लगती। प्रणव कुमार के उपन्यासों में प्रयुक्त आलंकारिक भाषा के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

उपमा

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

उद्यान में आई फूलों की गन्ध से सम्पूर्ण अन्त:पुर नन्दन-कानन-सा बन गया था।[54]

अरण्य के अपरिमेय सौन्दर्य से सीता थीं उच्छ्वसित।[55]

रूपक

रावण ने अपने हाथों से रजत-मंडित सुविशाल द्वार खोला तो भीतर थे रत्नमंजूषा के शताधिक अंतर्कक्ष।[56]

म्लान मुखमंडल पर उच्छ्वास का क्षीणतम भाव भी नहीं था।[57]

वात्सल्य का नैवेद्य।[58]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप-गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति ही अलंकार है।"[59] रामकथात्मक उपन्यास गद्यमयी हैं, उन में भी आलंकारिक भाषा प्रयुक्त हुई हैं। 'अपने अपने राम' में प्रयुक्त आलंकारिक भाषा इस प्रकार है–

उपमा

जैसे कुठार लकड़ी को चीर कर रख देता है, वैसे ही तेरा हृदय फट जाए। जैसे सेमल का फूल फट कर अलग हो जाता है वैसे ही तेरा सिर फट जाए। जैसे उबलती कड़ाही फेन छोड़ती है वैसे ही तेरे मुँह से फेन उठे।[60]

रूपक

रूपगर्विताओं और मानिनी युवतियों को तुष्ट करने के लिए आकाश के तारे तोड़ कर लाने का वचन देने वाले सचमुच आकाश के तारे तोड़ने नहीं जाते।[61]

विभावना

अत: यदि धर्म का लोप हो जाएगा तो ब्राह्मण का भी लोप हो जाएगा।[62] इस प्रकार, आलोच्य उपन्यासों में विविध प्रकार के अलंकारों से युक्त भाषा का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष : कथ्य को शिल्प-विधान कला-रूप में ढालने की प्रक्रिया को शिल्प-विधान या शिल्प-विधि कहा जाता है। उपन्यासकार की मूल संवेदना और उसका उद्देश्य शिल्प को एक विशेष आकार देते हैं और वे शिल्प के माध्यम से ही व्यंजित होते हैं। प्रत्येक रचनाकार अपने कथ्य के अनुरूप एक नई भाषा और शैली की तलाश करता है। उपन्यास अपने आप में एक ऐसा कला-स्वरूप है, जिसमें नई-नई तकनीकों की खोज की सम्भावना प्राय: अधिक रहती है। उपन्यास का स्वरूप एक कला-स्वरूप के रूप में विविध स्तरों पर होता है। लेखक का

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

दृष्टिकोण उसके कला-स्वरूप को निर्धारित एवं प्रभावित करता है। इतिहास या पुराण आधारित उपन्यासों में एक ओर अतीत कालीन परिवेश को जीवन्त बनाना जरूरी होती है तो दूसरी तरफ युगीन यथार्थ को अभिव्यंजित करना आवश्यक बन जाता है। अत: ऐसे उपन्यासों में रचनाकार को शिल्पगत सजगता में दुहरे दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। अलोच्य उपन्यासों में तत्कालीन परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है। इन उपन्यासों में परिवेश के अनुसार संस्कृत शब्दों का बाहुल्य दिखाई पड़ता है। उपन्यासकारों ने भाषा को एक साधन के रूप में प्रयोग किया है तथा शब्द-शक्तियों से रामकथा के प्रसंगों को अभिव्यक्त किया है। उनकी भाषा शुद्ध, संस्कृतमय खड़ीबोली है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की अवधी जैसी आंचलिकता नहीं है। भाषा के द्वारा सृजित वाक्य-रचना से पात्रों के चरित्र सुसभ्य, ज्ञानी, विनीत एवं सदाचारिओं के रूप में अभर आये हैं। मुख्यत: तत्सम एवं तद्भव शब्दों से युक्त लेखकों की भाषा कुछ-एक स्थानों को छोड़कर पात्रानुकूल लगती है तथा पाठकों के लिए राम-चरित्र के मूल्य एवं उनकी सार्थकता बहुत सहज एवं हृदय-स्पर्शी भाव में प्रस्तुत करती है। लेखकों का भाषा पर पूरा अधिकार दिखता है तथा वे भावानुसरण में सक्षम दिखते हैं। आलंकारिक भाषा प्रयोग में उनकी चमत्कारिता दिखती है। उन्होंने मुहावरों एवं लोकोक्तियों में लक्षणा और व्यंजना के प्रयोग से सूक्ष्म भावों को स्थूल साकार रूप प्रदान किया है। भाषा के उचित प्रयोग से रामकथाकारों ने अपने पात्रों के चरित्र पाठक के मर्मस्थल तक पहुँचाकर अपने उचित प्रभाव छोड़ने में सक्षम हुए हैं।

इस प्रकार विभिन्न पात्रों की भिन्न-भिन्न मन:स्थितियों और मनोद्वन्द्व को चित्रित करने में रामकथात्मक उपन्यासकारों की भाषा बहुत सफल सिद्ध हुई है।

सन्दर्भ संकेत :

1. रमानाथ त्रिपाठी - रामगाथा, पृ.88

2. वही, पृ.92

3. वाल्मीकीय रामायण-अयोध्याकाण्ड-सर्ग-12-107-108

4. वही-सर्ग-19-23

5. वही-सर्ग-21-10-11

6. वही-सर्ग-74-33

7. वही-10-2

8. रामचरितमानस-अयोध्याकाण्ड-32-3

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

9. वही-45-1

10. वही-71-3

11. नरेन्द्र कोहली - अभ्युदय-1(दीक्षा), पृ.20

12. वही, पृ.186

13. वही, पृ.21

14. वही, पृ.14

15. वही, पृ.17

16. वही - (अवसर), पृ.302

17. वही - (संघर्ष की ओर), पृ.586

18. वही - अभ्युदय-2(युद्ध-1), पृ.164-165

19. वही - (युद्ध-2), पृ.491

20. प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय - अमृतपुत्र, पृ.193

21. वही - पदातिक, पृ.55

22. वही, पृ.107

23. वही - अरण्यकाण्ड, पृ.205

24. रमानाथ त्रिपाठी - रामगाथा, पृ.105

25. रमानाथ त्रिपाठी - रामगाथा, पृ.88

26. भगवान सिंह -अपने अपने राम, पृ.307

27. वही, पृ.343

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

28. वही, पृ.308

29. भगवान सिंह -अपने अपने राम, पृ.179

30. वाल्मीकीय रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-1-1

31. वही-सर्ग-8-24

32. वही-अयोध्याकाण्ड-सर्ग-23-2-3

33. वही-अरण्यकाण्ड-सर्ग-17-4

34. वही-सर्ग-27-10

35. वही-अयोध्याकाण्ड-सर्ग-50-16

36. संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.77

37. पं.अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध - प्रियप्रवास की भूमिका

38. गोस्वामी तुलसीदास, पृ.141

39. रामचरितमानस-अरण्यकाण्ड-31

40. वही-बालकाण्ड-3

41. वही-263-3-4

42. वही-अयोध्याकाण्ड-215

43. वही-215-3

44. नरेन्द्र कोहली - अभ्युदय-1(दीक्षा), पृ.10

45. वही - अभ्युदय-2(युद्ध-1), पृ.277

46. वही, पृ.300

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

47. वही - अभ्युदय-1(दीक्षा), पृ.185

48. वही, पृ.32

49. वही, पृ.81

50. वही - अभ्युदय-1(अवसर), पृ.349

51. वही - (दीक्षा), पृ.180

52. वही, पृ.170

53. नरेन्द्र कोहली - अभ्युदय-1(अवसर), पृ.351

54. प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय - अमृतपुत्र, पृ.15

55. वही - पंचवटी, पृ.8

56. वही, पृ.81

57. वही

58. प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय - अमृतपुत्र, पृ.12

59. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - रस मीमांसा, पृ.292-293

60. भगवान सिंह - अपने अपने राम, पृ. 31

61. वही, पृ.131

62. वही, पृ.309

आधार-ग्रन्थ :

रामकाव्य

1. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण - गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2024 वि.

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

2. श्रीरामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2008 वि.

उपन्यास

1. अपने अपने राम - श्री भगवान सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.1998

2. अभ्युदय भाग-1 और भाग-2 - नरेन्द्र कोहली, अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली, सं.1998

(जिनमें कोहली जी के पाँच उपन्यास यथा- दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध-1 और युद्ध-2 संकलित हैं।)

3. अमृतपुत्र - प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, सं.1993

4. अरण्यकाण्ड - प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, सं.2004

5. पंचवटी - प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, सं.1999

6. पदातिक - प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, सं.1995

7. रामगाथा - डॉ. रमानाथ त्रिपाठी, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, सं.1998